ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

डॉ संतोष कुमार तिवारी की समीक्षा दृष्टि

अनीता
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्तात्कोत्तर
महाविद्यालय,
दमोह, म0 प्र0

सारांश

एक लेखकीय व्यक्तित्व की श्रेष्ठ समीक्षा दृष्टि की गहन संवेदना डॉ0 संतोष कुमार तिवारी के आलोचना साहित्य की पहचान है। कवि और रचना के वैशिष्ट्य की अद्भुत क्षमता के साथ–साथ वे तुलनात्मक समीक्षा दृष्टिकोंण भी प्रतिपादित करते हैं। वे शस्त्रीय समीक्षा दृष्टि का उचित समायोजन व संतुलन उनकी सार्थक समीक्षा का श्रेष्ठ दायित्व बोध और उनके शिष्टता सम्पन्न व्यक्तित्व का परिचायक है। एक सार्थक सर्जना का मूल सत्य उनकी रचना धर्मिता का सौंदर्य बोध और प्रखर समीक्षा दृष्टि का अद्भुत मणिकंचन योग है।

मुख्य शब्द : बहुआयामी प्रतिभा, शिक्षाविद, तात्विक विवेचन, उन्नायक सूत्रों, मानवीय प्रयोजन, उज्जवल और भास्वर मानवीय ऊष्मा, तार्किक विश्लेषण मानवीय करूणा निष्पक्ष दृष्टि, वैचारिक वातायन।

प्रस्तावना

एक बहुआयामी प्रतिभा और निष्ठावान समीक्षक की उदात्त–विलक्षण, तीक्ष्ण, बौद्धिक क्षमताा डॉ संतोष तिवारी की समीक्षा दृष्टि से विस्तार पाती है । उनके लेकन की द्वितीय कला और व्यापक ज्ञान धारा उन्हे मनशील अध्येता के रूम मे समीक्षा साहित्य में प्रतिष्ठापित करती है। उनके व्यक्तितत्व की सहजता ऊर्जा सम्पन्न........उदार विचारक व चिन्तक का पयार्ध्य बनकर एक समीक्ष्क विभूति का रूपायन करती है। साहित्य सृजन का दायित्वबोध अद्भुत समायोजन क्षमता के साथ डॉ0 तिवारी के कृतित्व में रचनाकार और समीक्षक का मणिकांचन रूप निर्मित करता है। उनका निर्भीक लेखन साहित्य समीक्षा में आलोचक की सर्जना शक्ति और बुद्धि तत्व का निष्पंदन प्रस्तुत करता है। उनका शास्त्रीय समीक्षात्मक चिन्तन स्पशटवादी सन्तुलित लेखन की पृष्ठभूमि पर समीक्षा की सार्थकता प्रातिपादित करता हैं वे उदार विचारक व चिन्तक के साथ प्रखन समीक्षक का शिष्टता सम्पन्न व्यक्तित्व है।

एक शिक्षाविद् के रूप में समीक्षा के मानदण्डों को निज दृष्टि में निर्मित करने में उनके वैचारिक परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समीक्षक चिन्तक का वांछनीय गाम्भीर्य उनके लेखन में विद्यमान है। समीक्षा को वे साहित्य का रचनाधर्म स्वीकार करते हुए विशुद्ध चिन्तन और पूर्ण निष्ठा के साथ साहित्यिक दृष्टि से रचना को अवलोकित करना अनिवार्य समझते हैं। उनके सशक्त लेखन की मौलिकता का आधार यथार्थ दृष्टि से जीवन का अध्ययन, मनन और ग्रहण है।

एक सफल अध्यापक की गम्भीर भूमिका में वे साहित्य का तात्विक विवेचन और उसे अपने मंतव्य से प्रस्तुत करने की नितांत निजी रीति अपनातें है। समीक्षा के प्रति गाम्भीर्य पूर्ण विश्लेषण सौष्ठव पूर्ण चिन्तन, रचना के मर्म को भेदकर उसकी सूक्ष्म, सुष्ठु व गहन व्याख्या करना डॉ0 तिवारी का समीक्षा दृष्टि का विशिष्ट प्रभावशाली पक्ष है।

वे स्वतन्त्रता के पक्षधर हैं और स्वतन्त्रता को जीवन का आधारभूत निजी तत्व मानते हैं। वे कहते हैं....................''स्वतन्त्रता की दुनिया की सर्वोत्तम और श्रेष्ठतम मॉग है।''

इसी स्वतन्त्रता को वे चिन्तन धारा में स्थापित करते हैं, क्योंकि स्वतन्त्र चिन्तनधारा में निष्पक्ष दृष्टि के साथ अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास और जीवन मूल्यों के प्रति अगाध निष्ठा जन्म लेती है। यही 'स्वतन्त्र चिन्तनधारा' उनको समीक्षा दृष्ठि का प्रमुख गुणधर्म है। वे साहित्य सृजन के चिरंतन मानदण्डझें का नूतन दृष्टि से अनुशीलन करते हुए एक अन्वेषण का दिशा बोध भी देते है।

डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि संस्कृति के उन्नायक सूत्रों का विस्तारण की करती है। वे साहित्य और रचना को संस्कृति की छाया में सर्वयुगीन और सर्वदेशीय स्वरूप के साथ आदर्शों और सम्भावनाओं का पोषक स्वीकार करते हैं।

क्योंकि ''संस्कृति में जीने वाले रचनाकार ही कालजयी होते हैं।'' वे अपनी सर्जनात्मक पहचान बनाने में सफल हुए और उनकी विभाजित और विकसित सर्जना दिशा ने एक नूतन रचना शिल्पी का भव्य व्यक्तित्व समीक्षा के माध्यम से प्रकट किया। उनकी जीवन सापेक्ष चिंतना, मूल्य समर्पित विचारणा और मानव–प्रतिबद्ध भावना ने जो समीक्षा दृष्टि आलोकित की वह जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का सुन्दर समन्वय है। डॉ0 तिवारी का समीक्षा जगत् उदात्त मानवीय गरिमा और संवेदना का मनस्वी संस्करण है।

''रचनाओं से एकात्म होकर परिवेश गत सच्चाइयों से वाकिफ होकर, मानवीय संवेदना और प्रखर सामाजिक चेतना से सम्पृक्त होकर जो समीक्षक अपने दायित्व का निर्वहन करता है, वही सांस्कृतिक पीठिका और मानव मूल्यों का उद्घोषक हो सकता है।

डॉ0 संतोष तिवारी, समीक्षा की रचनात्मक (प्रहचान, पृ0 30) एक प्रतिभा कौशल समृद्ध प्राध्यापक का अनुशासन सृजित व्यक्तित्व और निरन्तर गतिमान चिन्तन का अद्भुत समवाय डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि के सौन्दर्य को द्योतक है। भाष का जादुई उच्चारण, तार्किक स्पष्टीकरण और ज्ञान समृद्ध अभिव्यक्ति उन्हें उच्चकोटि का समीक्षक। रचनाकार प्रमाणित करती है। अपने लेखकीय चरित्र को निज व्यक्तित्व का पर्याय बनाकर समीक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रभाव के सन्दर्भ बन गए।

''हिन्दी समीक्षा के इलाके में चल रहे मंथन और संघर्ष, प्रश्न और समाधान, ईमानदारी और पाखण्ड के इन सारे सन्दर्भों में डॉ0 संतोष कुमार तिवारी का समीक्षा कर्म एक व्यवस्थित आष्वस्ति प्रदान करता है।'

(डॉ0 बालेन्दु शुक्ल, अभिनन्दन ग्रन्थ, डॉ0 संतोष कुमार तिवारी पृ0 28)

उनके साहित्यिक व्यक्तित्व और ज्ञानशील कृतित्व का साक्षात्कार स्वयं उनका समीक्षक आचरण है। समीक्षकों की परम्परा को समृद्ध करने वाले वे एक समर्थ समीक्षक। रचनाकार हैं। उनकी समीक्षा स्वयं सर्जना बन बैठी है। उन्हें 'सर्जनात्मक समीक्षक' की संज्ञा से मंडित करना अधिक श्रेयस्कर और सम्माननीय अभिनन्दन होगा। वे आलोचक/समीक्षक के रूप में अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने वाले साहित्य सृजन से भिन्न एक रचनात्मक व्यक्तित्व की अनूठी ताजगी और समीक्षात्मक प्रखर दृष्टि का विलक्षण संगम है।

''डॉ0 संतोष तिवारी ने इतिहास गति से अपने को जोड़कर न सिर्फ अपनी समीक्षा को जड़ होने से बचाया है, एक गतिशीलता भी प्राप्तम की है, जिसकी वजह से वे नवांगतुक प्रतिभाओं के आकलन समीक्षण में भी पूर्ण मनोयोग से जुट सके।''

(प्रो0 डॉ0 श्रीकांत जोशी, अभिनन्दन ग्रन्थ,
डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, पृ0 37)

एक सार्थक सर्जना का मूल सत्य उसके शब्द और कर्म सौन्दर्य का एकीकरण है, वही रचनाकार का चरित्र है। डॉ0 तिवारी की मान्यता है–

''एक सार्थक सर्जना हमेशा अपने नए प्रतिमान गढ़ती है। कभी वह अपने पाट को चौड़ा करती है और कभी अपने ही तटबंध तोड़ती है। वह किसी बने–बनाये चौखटे में फिट नहीं होती ।''

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, संवादों के सिलसिले, पृ0 55)

उनकी समीक्षा दृष्टि आचरण जन्य मूल्यों की चेतना दृष्टि है। उनकी दृष्टि में–''सार्थक रचनाशीलता क्रमशः अपना अपेक्षित स्थान पा लेती है।'' डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि मानवीय प्रयोजन और प्रवर जीवन मूल्यों की सतत् प्रतिष्ठा के लिए प्रस्तुत है। समीक्षा को श्रेष्ठतर से श्रेष्ठतम बनाने की कलात्मक अभिव्यंजना वे रचना के माध्यम से ग्रहण करते हैं और उसक निज दृष्टि के आलोचक मार्ग से उज्ज्वल और भास्वर बनाते हैं–

''एक सार्थक रचानाकार अपने आप सृजन के उस मोड़ पर पहुॅच जाता है जहॉ उसकी वैचारिकता पूर्णतः संवेदनाओं में तिरोहित हो जाती है और संवेदनाएॅ वैचारिकता से सम्पृक्त हो उठती है।''

(डॉ0 संतोष तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 6)

उनकी समीक्षा दृष्टि में ''विचारों और संवेदनाओं का विस्तार मूलतः जीवन का विस्तार है।'' उनकी व्यापक संवेदना भूमि समयान्तर से व्यापकतर बनती गई। और उनके समीक्षा चिन्तन का भावबोध स्वयं नए प्रतिमान रचनपे में स्वतन्त्र हो गया। समीक्षा के प्रखर सूत्रधार के रूप में वे समीक्षकों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण बंध बनकर प्रतिष्ठा पाते हैं। वे कवि समीक्षक रूप में सर्वप्रथम अपना परिचय देते हैं, जहॉ कवियों की मौकि रचनाधर्मिता के परिप्रेक्ष्य में उभरी समीक्षा चेतना उनकी निज मौलिक चिन्तनधारा और उत्कृष्ट साहित्य बोध का द्योतक बन जाती है। उनकी समीक्षा में सत्य का साक्षात्कार, दृतिकार के कृतित्व के संरक्षण और यथार्थ का स्वीकार्य है। यथार्थ को विद्रूपण की भूमि से मुक्त रखते हुए स्वस्थ साहित्यिक पर्यावरण में मानवीय गरिमा का आदर्श और सदाशयता की स्थापना करते हैं। वे इस स्वस्थ मानसिकता और निरापद रचना यात्रा पर वक्तव्य देते हैं।–

''रचना के साथ भीतरी यात्रा करने की सामर्थ्य जिस समीक्षक में नहीं होती वह न तो रचना का स्वस्थ विश्लेषण दे सकता है और न कथा–सूत्रों के महीने तानो–बानों का उद्घाटन कर सकता है।''

समीक्षा की समृद्ध यात्रा में डॉ0 तिवारी का सृजन उत्तरशती की समीक्षा में एक उर्वरा भाव–भूमि के शिल्पी रूप में अपना स्थान–बोध देती है। समीक्षा की तीक्ष्ण–लेखनी और अर्थग्राही प्रवृत्ति से समीक्षा के मौलिक सृजन का निष्पक्ष विश्लेषण करने का चुनौतीपूर्ण कार्य डॉ0 तिवारी की प्रतिभा प्रवणता में विद्यमान हुआ उन्हें कवि समीक्षक के एक निश्चित आवृत्त में स्थापित करना उचित नहीं होगा क्योंकि उनकी समीक्षा का चिन्तन–पक्ष अति विस्तृत और बहुआयामी है। वे परिवेश और रचना के दायित्वबोध में जीवन–मूल्यों की खोज का गुरूतर कार्य सम्पन्न करते हैं।–

''समीक्षक का दायित्व परिवेश और रचना के माध्यम से उभरे जीवनबोध से होता है। यदि रचनाकार का दायित्व सरोकार की गहरी पकड़ के साथ मानव जीवन को उभारना है तो जीवन मूल्यों की तलाश और परिवर्तन के जीवंत तत्वों को समझना समीक्षक का भी दायित्व है।''

उनका समीक्षक व्यक्तित्व हिन्दी–साहित्य इतिहास की समीक्षा विधा में उपयुक्त परिप्रेक्ष्य के साथ मूल्यांकित करना डॉ0 तिवारी के समीक्षा कर्म का उचित हिन्दी सम्मान होगा, क्योंकि उनका समीक्षा लक्ष्य सीतिम और सतही नहीं है व मानव चिन्तन धरा का ऐसा निर्झर है जो कभी प्रवाह गति में शैथिल्य नहीं पाता उसकी भावभूकम कभी निस्तेज और शून्य नहीं होती हे। एक सार्थक सर्जक की सूक्ष्म दृष्टि का उज्जवन तार्किक विश्लेषण उनके समीक्षा सूत्रों को दृढ़ और भव्य बनाता है। साथ ही परम्परा को प्रगतिशील बनाए रखनें में बल देता है।

''डॉ0 तिवारी का समीक्षा कर्म उनके गम्भर विश्लेषण, दो टूक निभ्रांत निष्कर्षात्मक और सर्वत्र जनधर्मी सोच से अनुशासित और सम्पन्न है। न तो वे पिष्ट पेषण करते हैं, न किसी बड़े व्यक्तित्व से आक्रांत होने का प्रमाण देते हैं।''

(डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ, अभिनन्दन ग्रंथ,
डॉ0 संतोष कुमार तिवारी पृ0 49)

डॉ0 तिवारी की समीक्ष दृष्टि मानवीय ऊष्मा और सर्जनात्मक ऊर्जा सम्पन्न है। इसमें गहरी संवेदनशीलता और कला का अंतरंग भाव प्रभावशाली मानवीय सम्बन्धों का कार्यकारण स्थापन करती है। वे लिखते हैं–

''व्यक्ति की रागात्मकता निजी रिश्तों की गहरी निष्ठा से क्रमशः विकसित होती हुई चिन्तन की सामाजिकता और मानवीय सरोकार से निरन्तर जुड़ती रहती है। इस तरह एक व्यापक अनुभव संसार का निर्माण करती हुए रचना की जर्मन क्रमशः सबलतर होती जाती है। यह सहज संलग्नता एक गहरी आकुलता के साथ तकलीफ देह जिन्दगी को समय के आमने–सामने उपस्थित करती है, लेकिन कवि की बौद्धिकता कभी भी आदमियत की गहरमाहट को ठण्डा नहीं होने देती। अनुभव संवेदना का यह विस्तार व्यक्तिगत को भी 'व्यक्ति–व्यक्तिगत' बना देता है। यह संसार पारदर्शी ऐंद्रिकता के साथ मानवीय विश्वास को सहेजता है और भावना, आतंक तथ उत्पीड़न से हर छोटे–छोटे सन्दर्भों को भी एक मानवीय ऊष्मा और आशय प्रदानकरता है।''

(डॉ0 संतोष तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 26)

डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि रचना के सामयिक यथार्थ का अनुभव कराने में सक्षम है जिसमें रचना का आकर्षण और सन्तुलन का सामंजस्य भी विद्यमान है। इस सन्तुलन में मानवीय करूणा और आत्म संघर्ष की संकल्पशक्ति का आस्था मूलक सम्यक निर्वाह भी है। यही मानवीय दृष्टि उनकी समीक्षा दृष्टि को उर्जा प्रदान करती है।

''मानवीय ऊष्मा विकास के दरवाजों को बन्द नहीं रहने देती। बेहतर जिन्दगी के लिए परिवर्तन और परिवर्तन के लिए संघर्ष शक्ति की ललक हमें ही नहीं, दूसरों को भी ऊर्जा प्रदान करती है, वह चुप नहीं बैठ सकती।''

(डॉ0 संतोष तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 38)

डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि का आधार फलक अति विस्तृत है उनका आत्मविस्तार उन्मुक्त सृजन का विस्तृत आकाश समेटे हुएस है। अनुभूति सम्पन्न चिन्तन का उद्घाटन जीवन से संलग्नता की सार्थकता सिद्ध करता है। एक समीक्षक दृष्टि से और रचनाकार की सामर्थ्य से वे रचना का सार्थकता और प्रयोजनीय भूमिका के प्रश्न भी उपस्थित करते है।

''रचनाकार अपनी कृति की स्वयं आलोचना करते समय उन तथ्यों को अच्छी तरह प्रकाश में लाता है, जिन्होंने रचना के सृजन में सार्थक भूमिका निवाही।''

(डॉ0 संतोष तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 115)

वे निष्पक्ष दृष्टि से आलोच्य कर्मा पर शाश्वत् प्रश्न करते हैं–

क्या रचनाकार/समीक्षक कृति में अनुस्यूत सन्दर्भों की व्याख्या कर पाता है? क्या उसके सिद्धान्त अधिक प्रमाणिक होते है? क्या वह अपनी रचना–प्रक्रिया की आरोपित करने की कोशिश में एक रचनाकार समीक्षक की सन्तुलित दृष्टि से परख कर देते हैं। जहॉ रचनाकार की सार्थकता प्रमाणित होती है।–

''निजिपन का संसार और सामाजिक चेतना की भावभूमि की एक सार्थक कलाकार साथ–साथ समेटकर चलता है, उसमें कोई भेद नहीं रह जाता। कवि–समीक्षक का मन पूर्वाग्रह मुक्त एवम् संवेदनशील होता है। उसकीर परिष्कृत रूप और सांस्कृतिक चेतना सौन्दर्य–दर्शन को उर्ध्व प्रदान करती है। अंतरतम विकास और लोक–समुदाय का जीवन सत्य साथ–साथ चलता है।''

(डॉ0 संतोष तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 116)

सामाजिक मूल्यों की संवेदनात्मक भूमिका का स्पर्श समीक्षक करता है।

समीक्षक की संतुलित दृष्टि रचना को पारदर्शी बनाकार एक यात्रा पूर्ण करता है। शाश्वत मानवीय दृश्टि मानवीय सम्बन्धों और रचनात्मक शक्ति की सार्थक अभिव्यक्ति का प्रमाणीकरण देती है। डॉ0 संतोष तिवारी की समीक्षा दृष्टि इसी दृश्यगत को धारण करती हे। उनकी दृष्टि में 'सार्थक सृजन अनिवार्यतः अपने समय और समाज को प्रक्षेपित करता हुआ, बहुआयामी जीवन के यथार्थ का सीधा साक्षात्कार करता है।' वे स्वयं को तराशते हुए एक नूतन समीक्षा शिल्प की तलाश करते हुए यात्रा का प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं।

''डॉ0 तिवारी संतुलित दृष्टि से की गई समीक्षा के पक्षधर हैं। किसी बाद या विशिष्ट दृष्टिकोंणों के नहीं क्योंकि दुराग्रह पूर्ण आलोचना रचनाकार की दृष्टि और अनुभव जगत् से तालमेल नहीं बैठा सकती । उनकी दृष्टि में आलोचक को रचना से आलोचना की ओर जाना चाहिए, आलोचना से रचना की ओर नहीं।''

(डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त, अभिनन्दन ग्रन्थ, डॉ0 संतोष तिवारी, पृष्ठ 59)

इस सन्दर्भ में डॉ0 तिवारी की सचेतक दृष्टि स्वयं घोषणा करती है और सावधान भी करती है–

''हमें इस खतरे को समझना होगा कि कुछ समालोचक रचना से आलोचनाा की तरफ नहीं आते बल्कि आलोचना से रचना की ओर जाते हैं।''

रचना और समीक्षा का परस्पर सम्बन्ध स्थापन करते हुए एक वैचारिक वातायन रचनाकार की विचार भूमि को स्पष्ट और स्वतन्त्र रूप से अभिव्यक्ति प्राप्त होना

चाहिए उसे प्रस्तुत होने का उचित सीन और समय प्राप्त होना चाहिए। डॉ0 तिवारी रचनाकार की वैचारिकता को दबाने वाली प्रक्रिया का विरोध करते हैं। इसे समालोचना के क्षेत्र में शुभ संकेत नहीं मानते।

''संतोष तिवारी ने रचना और समीक्षा के पारस्पतरिक सम्बन्धों को ठीक तरह समझाा है। छोट–बड़ा कोई नहीं। समय निरपेक्ष कोई नहीं। प्रतिमानों के नाम पर अपरिवर्तनीय कुछ नहीं। दोनों समाज सापेक्ष है। युग की रूचियों का दबाव दोनों पर पड़ता है।''

(डॉ0 देवेन्द्र दीपक, अभिनन्दन ग्रन्थ, डॉ0 संतोष तिवारी, पृ0 39)

मानवीय सन्दर्भों से परिचय प्राप्त करने की संवेदनशीलता और पूँजीभूत वैचारिकता जीवन की सामयिक सत्य विथियों से मार्ग पाती विस्तृत फैलाव और अनन्त की भावना से सम्पृक्त मानवीय करूणा और आत्मीयता के सूत्र बॉधने के संकल्प रचती है। डॉ0 तिवारी मानते हैं कि 'विचारशील जीवन दृष्टि और मानवीय अनुभूतियों की ऊष्मा विकास की अनन्त सम्भावनाओं को बरकरार रखती है।' उनकी समीक्षा दृष्टि ससर्जना के चिन्तन आयामा प्रत्यक्ष करती है। इसमें जीवन निर्माण के दायित्व का श्रेष्ठ भार वहन की संघर्ष शक्ति है और जनचेतना का उद्घोष भी। वे समीक्षा के माध्यम से रचना की जीवंतता, गतिशीलता और प्रगतिगामी जीवनेच्छा का प्रचुर संदेश प्रसारित करते हैं। क्योंकि साहित्य में मानव जीवन के उत्कृष्ट भविष्य की अन्याय सम्भावनायें निहित होती है। अतः रचनाकार का निज वैशिष्ट्य महत्वपूर्ण बनता है वे मानते हैं कि यदि समीक्षक ने तटस्थ, निर्लिप्त और अनुसंधान परक दृष्टि न हो तो नवीन अवधारणाऍ और पये सूत्र पकड़ में नहीं आते।'

''कविता अपने संश्लिष्ट रूप में रचनाकार के अनुभूति सम्पृक्त चिन्तन को उजागर करती है। कवता के रेशे–रेशे में जवीन के प्रति लगाव समाज के प्रति जुड़ाव और उच्चतर मानवीय मूल्यों का सार्थ रचाव होता है। जिस रचना की जमीन जीवन मूल्यों की तलाश में संलग्न नहीं रहती अथवा युगीन स्पंदनों से सम्पृक्त नहीं होती वह मात्र कलाबाजियों और दिखावे आक्रोशों में खो जाती है। रचना की सही पहचान है–उसका इन्सानी सरोकार एवम् सामाजिक यथार्थ की गहरी पकड़। रचना की सांस्कृतिक चेतना और उसका

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, आलोचना तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 55)

वे समीक्षा के विद्वता प्रदर्शन नहीं, श्रेष्ठ वक्तत्व के साथ संयत होकर आस्था सम्पन्न सिद्धान्त की बात करते हैं। विचारों का सूत्रात्मक प्रकटीकरण उसे कहन अर्थ सामथर्य देता है। उनकी समीक्षा दृष्टि साहित्यिक उत्कर्ष और अन्यान्य प्रगतिशील सम्भावनाओं के मार्ग प्रशस्त करती है। सत्यान्वेषी दृष्टि के साथ समीक्षा की कलात्मक सर्जना उन्हें विविध सौन्दर्य सम्पन्न शैली और अभिव्यक्ति के आकर्षण सूत्र में बॉधती है। स्पष्टवादिता के साथ वे रचना के आत्ममुग्ध होकर स्वयं श्रेष्ठ हो जाने के भ्रम को भी तोड़ते है। वे लिखते हैं।

''अपना रौव गालिम करने की प्रवृत्ति से रचनाकार को दूर रचना चाहिए क्योंकि अभी अंदाजे बयॉ काफी दूर है, मुगालते में रहना ठीक नहीं।''

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 54)

समीक्षा को लेकर उनकी स्वस्थ विचारधारा साहित्यिक आस्था से ओतप्रोत है। साथ ही वह आत्मविश्लेषण और आत्ममंथन के धरातल पर रचना के अनुशासन और संकल्पपूर्ण विश्वास को भी प्रेरित करती है। व्यक्ति और समष्टि के सामंजस्य में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का मानवीय ऊर्जा सम्पन्न जीवन भी आवश्यकता और अनिवार्यता के पक्ष के साथ उद्घाटित हुआ है। जहॉ उनका समष्टि चिन्तन का प्रयोजन सिद्ध होता है। उनकी समीक्षा में एक रचनाकार और कवि की भॉति संयामित विद्रोह की छटपटाहट भी है और अभीष्ट की नव उन्मेषशालिनी अपेक्षा भी।

''समालोचना केवल अखबारी वक्तव्यबाजी नहीं है, वह बौद्धिक सजगता और निस्संगता के साथ एक सर्जना भी है। गोष्ठियों में उछले–जुमले और भाषा के चमत्कार, गम्भीर आलोचना के सुनिश्चित मानदण्ड नहीं बन सकते। वे महज तात्कालिक कलाबाजियों ही होते हैं जिनमें वैचारिक खुलेपन का अभाव होता है और दृष्टि संकीर्ण।''

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 20)

वे मानते हैं कि समीक्षक की दृष्टि रचनाकार को सीमाबद्ध करने के लिए अंकुश का कार्य करती है। वे रचनाकार के रचना धर्मिता भेद को अपनी मूल संवेदना से सम्बन्ध स्थापन करने में आत्मीयता का सेतु निर्माण करते है। उनकी समीक्षा दृष्टि का स्वस्थ मनोभाव रचनाकार की साहित्यिक जिजीविषा बौद्धिकता के भार से मुक्त डॉ0 तिवारी का समीक्षा दृष्टि रचनाकार पर सजग बनी रहती है वे समीक्षा सन्दर्भों का मूल्यवान रेखांकन प्रदान करते हैं उनकी दृष्टि में '' रचनात्मक लेखन और समीक्षा प्रणाली दो विरोधी स्थितियॉ नहीं हैं क्योंकि समीक्षा मूलतः रचना में निहित अनुभवों की सूक्ष्म पकड़ है।''

क्योंकि समीक्षक साहित्य का उन्नायक होता है। वह कृति के मर्म का भेदन करता है रचना की उत्कृष्टता की कोटि का विभाजन करता है। अतः एक प्रबुद्ध रचनाकार का चिन्तन समीक्षा में दृष्टिगोचर होता है। जो अनुभव सम्पन्न विश्लेषण से रचना की सार्थकता का निरूपण करता है।

''समीक्षक की यात्रा एक ओर रचना के भीतर से गुजरती है तो दूसरी ओर बस्तुजगत् के यथार्थ और युगीन जीवन की हलचलों से सम्पृक्त होती है।''

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ0 10)

डॉ0 तिवारी ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं जो निज सामर्थ्य और सर्जना के आधार बलि पर विशिष्ट समीक्षा दृष्टि का अंकन कर सके। उनकी सर्जनात्मक क्षमता आत्मबोध की आभा से दीप्त है। प्रत्येक रचनाकार सम–सामयिक परिवेश और परिस्थिति का सहगामी और भोक्ता होता है। डॉ0 तिवारी की प्रखर सामाजिक चेतना

सत्य से अति निकट का सम्बन्ध स्थापन करती है। वे लिखते है–

''रचनाकार परिस्थितियों का सहभोक्ता होता है, अतः उसका जीवनबोध अधिक प्रासंगिक और गहरा होता है। उसकी प्रखर सामाजिक चेतना यथार्थ का साक्षात्कार करती है और युगानुरूप जीवन–मूल्यों को तलाशती हुई मानवीय सम्भावनाओं को पहचानती है।''

(डा0 संतोष कुमार तिवारी, अज्ञेय से अरूण कमल, भाग–1, पृ0 76)

वे कहते हैं 'मानवीय अंतरात्मा मानवीय विवेक चेतना की हलचल मचाने वाली पीड़ा' जिस रचनाकार में नहीं होती वह चतुर अवसरवादी या चालाकी समझौतावादी होता है।'' वे एक अन्य स्थान पर ऐसा ही वक्तव्य देते हैं–

''रचनाकार अपने समय से जूझता उलझता है। वह युगीन परिस्थितियों और परिवेशगत सच्चाइयों का सहभोक्ता और सहयात्री होता है। उसका चिन्तन प्रश्नाकुलता के रूप में कई सवालों को उकेरा जाता है और हम समस्या की तह तक पहुॅचने लगते हैं।''

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, आलोचना के दायरे में, पृ0 34)

रचना और मानव जीवन का सम्बन्ध स्थापन आवश्यक है क्योंकि दोनों ही परिवर्तन प्रभावित होते हैं। अतः परिवर्तन की भूमि से पहचान आवश्यक है।

''यदि बदलते सामाजिक दबावों के फलस्वरूप रचना का मिजाज बदलता है तो उसकी भूमिका के अनुरूप आलोचना के प्रतिमानों में भी बदलाव नजर आता है।

(डॉ0 संतोष कुमार तिवारी, अज्ञेय से अरूण कमल, भाग–1, पृ0 17)

रचनाकार को सामाजिक दबावों के परिवर्तनों के अनुरूप प्रतिमानों और पद्धतियों की खोज आवश्यक है। वे सर्जनात्मक, आस्था के प्रति समर्पिप समीक्षक हैं। डॉ0 तिवारी की समीक्षा दृष्टि से सूक्ष्म ग्राहिणी शक्ति और विश्लेषण का क्षितिज व्यापी प्रसार भाव विद्यमान है वे रचना के गहनतल का स्पर्श करते हुए रचना के हृदय की लोकध्वनि का मर्मनाद श्रवण करते हैं यही उनकी निष्कर्षक मूल्यवत्ता का सूत्र है वे कहते हैं–

''सार्थके और तलस्पर्शी समीक्षा के लिए मूलतः दो बातें आवश्यक मानी जाती है–रचनाकार की आस्था में डबूने–तैरने की ओर आसपास की परिवेशगत सच्चाइयों से वाहिफ होने की सामर्थ्य न हो, तब तक रचनाकार के साथ न्याय नहीं किया जा सकता। यदि समीक्षक में तटस्थ, निर्लिप्त और अनुसंधानपरक दृष्टि न हो तो नवीन अवधारणाएॅ और नए सूत्र पकड़ में नहीं आते।''